The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 5 | May 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, एक भौगोलिक अध्ययन, जनपद हरदोई के संदर्भ में

संजेश कुमार
शोध छात्र, नेट/जे०आर०एफ०, रजि. नं०19180001
केन सोसायटीज नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई
E-mail id - 1234kumarsanjesh@gmail.com

डा० अरुण कुमार मौर्य
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, केन सोसायटीज नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई
E-mail id: draruncsn@gmail.com

प्रस्तावना:

बढ़ती अनियंत्रित जनसंख्या के कारण अपूर्णीय आवश्यकताओं की मांग बढ़ रही है लगातार बढ़ रही है तथा समस्त जनसंख्या को सुलभ संसाधन उपलब्ध कराना आसान कार्य नहीं है क्योंकि जिस रफ्तार से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उस गति से संसाधनों के विकास में वृद्धि नहीं होती है जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में अनेक संसाधनों की कमी पाई जाती है। संसाधन विहीन मानव को अपने विकास की कल्पना करना जागते सपने देखने जैसा है क्योंकि कोई भी व्यक्ति संसाधनों के भाव में अपना विकास संपन्न नहीं कर सकता है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले समस्त संसाधन विरल मात्रा में एवं विषम क्षेत्रों में पाए जाते हैं इनका वितरण असमान है उस क्षेत्रों में संसाधन अधिक मात्रा में संचित हैं किंतु ऐसे स्थानों पर जनसंख्या अनुकूलतम ना होने के कारण मानव विकास निम्नतम स्तर का है जिसका उदाहरण अफ्रीकी उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन क्षेत्र है तथा इसके अलावा रूस का साइबेरियन एवं संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का अलास्का शीत क्षेत्र आदि। कुछ ऐसे भी स्थान होते हैं जहां पर जनसंख्या तो अधिकतम वितरित है लेकिन संसाधनों की न्यूनता होती है या क्षेत्र भी अपना विकास चरम सीमा तक नहीं कर पाते है क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों के अभाव में मानवीय संसाधनों का विकास अवरुद्ध हो जाता है। जनपद हरदोई एक अति पिछड़ा जनपद होने के कारण यहां पर रहने वाली अधिकतम जनसंख्या गरीब एवं पिछड़ी है अर्थात मानवीय संसाधन निम्न स्तर का है तथा प्रमुख दूसरी समस्या क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है जिसके कारण लोग अपना विकास बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं। मानवीय विकास को प्रभावित करने में स्वास्थ्य

सुविधाओं का प्रमुख योगदान होता है तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यकता मानवीय स्वास्थ्य को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए जनसंख्या में पाए जाने वाली स्वास्थ्य समस्याओं का निदान करना है। स्वास्थ्य समस्याएं मानवों की कार्य क्षमता को प्रभावित करती हैं जिससे उसका सर्वांगीण विकास प्रभावित होता है। मानव के स्वास्थ्य को उसके आसपास स्थित समस्त प्रभावकारी दशाएं प्रभावित करती हैं जैसे मानव की प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थिति आदि। स्वास्थ्य को प्रभावित करने में मानव के आसपास स्थित समस्त पर्यावरणीय दशाएं उत्तरदायी होती हैं। इस शोधपत्र में उन समस्त पर्यावरणीय दशाओं का विश्लेषण किया गया है जो मानवीय स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

शोध उद्देश्य:

- मानव की अधिवासीय स्थिति को समझना जो उसके स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।
- मानवी स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली मानवीय स्वास्थ्य जागरूकता का अध्ययन करना।
- मानव के आसपास क्षेत्र विशेष तथा मौसम विशेष में फैलने वाले विशेष रोगों की जानकारी प्राप्त करना।
- मानव की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थिति का आंकलन करना जो स्वास्थ्य को प्रभावित करने में विशेष योगदान देती है।

शोध प्रारूप:

शोध प्रविधि वह तकनीकी व्यवस्थित ज्ञान है जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने शोध विश्लेषण को संपन्न करता है तथा शोध में व्याप्त विभिन्न प्रकार की कमियों एवं समस्याओं को शोध विधि के द्वारा संशोधित किया जाता है शोधार्थी के द्वारा इस शोध पत्र में मुख्यतः द्वितीय के आंकड़ों का उपयोग किया गया है द्वितीयक आंकड़े वह आंकड़े हैं जिन आंकड़ों का पहले से ही प्रकाशन हो चुका होता है। प्राथमिक आंकड़ों के अंतर्गत क्षेत्र का अवलोकन एवं भ्रमण तथा क्षेत्र वासियों से क्षेत्र में व्याप्त प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं की जानकारी साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त की गई है। स्वास्थ्य संबंधी द्वितीयक आंकड़ा जिला स्वास्थ्य अधिकारी एवं मातृ शिशु कल्याण केंद्र से प्राप्त किया गया है।

शोध क्षेत्र:-

शोध क्षेत्र जनपद हरदोई अति पिछड़ा हुआ जिला है जहां पर अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है जनपद हरदोई उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से मात्र 100 किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा में लखनऊ शाहजहांपुर जिले के बीच में स्थित है। शाहजहांपुर इसके पश्चिम की ओर सीमा बनाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद हरदोई की जनसंख्या लगभग 40 लाख के आसपास थी तथा यहां पर लगभग 35 लाख लोग गांवों में

निवास करते हैं जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है। अति पिछड़ा होने के कारण यहां पर लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं ज्यादातर होती रहती हैं। शिक्षा एवं गरीबी अधिक होने के कारण लोग अस्पतालों से दवा लेने से परहेज करते हैं जिसके कारण उनका स्वास्थ्य स्तर को लगातार गिरता जाता है तथा उनकी आर्थिक स्थिति लगातार नाजुक होती जाती है जो उनके आर्थिकविकास में बाधा उत्पन्न करती है।

जनपद में जनसंख्या एवं स्वास्थ्य समस्याएं:

जिन क्षेत्रों में भी उपलब्ध संसाधनों की अपेक्षा जनसंख्या का आधिक्य होगा वहां पर सभी को संसाधन प्राप्त न हो पाने की दशा में विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होगी। जिन स्थानों पर संसाधनों के अनुकूल जनसंख्या होती है वहां के मानव का जीवन स्तर उच्चतम होता है तथा वह संसाधनों का समुचित उपयोग आसानी से कर पाते हैं तथा इन संसाधनों के उपयोग से अपने जीवन का संतुलित विकास आसानी से कर पाता है। उच्च जीवन प्रत्याशा, जीवन स्तर, रोजगार के पर्याप्त साधन, संसाधनों का सदुपयोग, क्षेत्र की संतुलित जनसंख्या संरचना की स्थिति आदि कारक अभीष्ट जनसंख्या के सूचक हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने सर्वांगीण विकास हेतु जीवन पर्यंत प्रयत्नशील रहता है तथा राष्ट्र के विकास में अमूल्य योगदान देता है। उत्तर प्रदेश में भारत की सर्वाधिक जनसंख्या निवास करती है इस जनसंख्या अतिरिक्त के कारण राज्य कई समस्याओं से ग्रस्त है। क्षेत्र में संसाधनों की स्थिति की अपेक्षा में जनसंख्या की अधिकता है अर्थात अध्ययन क्षेत्र जनसंख्या की अधिकता से ग्रसित है। जनसंख्या का अतिरेक मानवी विकास में बाधास्वरूप होता है। मनुष्य के स्वस्थ रहने के लिए 300 कैलोरी की आवश्यकता होती है अर्थात उसे ऐसे भोजन को सम्मिलित करना पड़ता है जिसके द्वारा उसके शरीर को 300 कैलोरी ऊर्जा मिल सके। शहरी क्षेत्र में लोगों को मानसिक कार्य अधिक करना पड़ता है तथा शारीरिक कार्य काम करना पड़ता है इसलिए यहां पर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की अपेक्षा कम कैलोरी की आवश्यकता पड़ती है लेकिन ग्रामीण जनसंख्या जो कि अधिकतर शारीरिक कार्य करती है इसलिए इसे अधिकतम कैलोरी की आवश्यकता होती है। एक ग्रामीण व्यक्ति के लिए 2400 कैलोरी ऊर्जा की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। यह कैलोरी संतुलित भोजन के द्वारा प्राप्त होती है लेकिन क्षेत्र में अधिक गरीबी एवं पिछड़ेपन के कारण सभी को पर्याप्त मात्रा में संतुलित भोजन उपलब्ध नहीं है जिसके कारण ग्रामीण जनसंख्या विभिन्न शारीरिक समस्याओं एवं बीमारियों से ग्रसित है। परिणाम स्वरूप लोगों में कुपोषण, असामयिक मृत्यु, शारीरिक और मानसिक अपंगता, दुर्बलता, नेत्र रोग आदि बीमारियां आसानी से पनप जाती हैं। लोगों का निम्न जीवन स्तर एवं क्षेत्र में चिकित्सा संसाधनों की अनुपलब्धता से जनसंख्या की रोग निरोधक क्षमता कम हो जाती है तथा लोगों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है जिससे लोगों की उत्पादन क्षमता एवं कार्य क्षमता निम्न हो जाती है जिसके कारण ग्रामीण विकास प्रभावित होता है अर्थात

स्वास्थ्य सुविधाओं का ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है जिन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सामान्य होती है उन क्षेत्रों का विकास अधिक मात्रा में होता है।

1. **सांस्कृतिक कारक और स्वास्थ्य:**

शोध अध्ययन क्षेत्र गंगा बेसिन के गंगा गोमती दोआब में स्थित है यहां का धरातल समतल एवं चौरा है तथा भू आकृतिक विविधता नगण्य है अधिक समतल एवं उपजाऊ मिट्टी होने के कारण या क्षेत्र कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला है एवं इसमें रहने वाली अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 5989 है तथा यहां पर 4092845 लोग निवास करते हैं जनसंख्या का घनत्व 683 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। मानवीय प्रजातियों की दृष्टि से इस क्षेत्र में भूमध्य सागरीय एवं मंगोल प्रजातियों का मिश्रित समुदाय निवास करता है। भारत में मानव प्रजातियों का इतना अधिक मिश्रण पाया जाता है कि हम किसी भी प्रजाति को शुद्ध मानव प्रजाति नहीं कह सकते क्योंकि लगभग समस्त जनसंख्या का संकरण हो चुका है। जनसंख्या के स्वास्थ्य एवं विकास को उसका निवास स्थल प्रभावित करता है क्योंकि व्यक्ति जैसे स्थान पर रहता है उसी स्थान की झलक उसके व्यवहार एवं विकास पर दिखाई पड़ती है। अक्सर जल भराव वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोग मच्छर जनित बीमारियों से ग्रसित रहते हैं जिसका मुख्य कारण निवास स्थल है।

2. जीवन यापन के प्रमुख ढंग:

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला भूभाग होने के कारण लगभग यहां के 85% जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है। कृषि कार्य हेतु किसान लोग परंपरागत यंत्रों के स्थान पर आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग करने लगे हैं तथा गरीब एवं पिछड़े वर्ग के कृषक अभी भी परंपरागत यंत्रों का प्रयोग कृषि कार्य हेतु कर रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण यहां की कृषि जोत का आकार अत्यंत छोटा है तथा इन जूतों में जीवन निर्वाह कृषि ही संभव है क्योंकि जनसंख्या का अत्यधिक दबाव होता है। जनपद में खाद्यान्न फसलों की कृषि प्रमुख रूप से की जाती है जिसके अंतर्गत गेहूं चावल चना मटर आदि जनपद के कुछ क्षेत्रों में व्यापारिक कृषि के अंतर्गत सब्जियां मक्का आलू आलू गाना पिपरमेंट आदि की खेती बड़े स्तर पर की जाती है तथा इस व्यापारिक खेती से लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है लेकिन गरीब एवं पिछड़े जनसंख्या केवल मजदूरी पर ही निर्भर है क्योंकि इन लोगों के पास पर्याप्त खेतों का अभाव है तथा इन्हें दूसरों के खेतों पर कृषि कार्य करना पड़ता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अभी भी विपन विपन्न बनी हुई है। बीजों की उत्तम किस्में तथा फसल उत्पादन हेतु नवीन उर्वरक एवं कृषि हेतु विकसित की गई नई तकनीकी का यहां पर पर्याप्त अभाव है। आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण जनसंख्या को संतुलित भोजन नहीं मिल पाता है जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वह रोगों के शिकार होते जा रहे हैं। ग्रामीण जनसंख्या का निम्न जीवन स्तर, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की

कमी आदि से जनसंख्या में रोग प्रतिरोधक क्षमता घट रही है और नई नई बीमारियां लोगों में देखी जा रहे हैं इन बीमारियों का प्रभाव इनकी कार्यक्षमता पर पड़ता है जिससे ग्रामीण विकास प्रभावित हो रहा है यदि स्वास्थ्य सुविधाएं इन क्षेत्रों में दुरुस्त हो जाएंगी तो ग्रामीण विकास आसानी से हो सकता है।

भाषा:

भाषा संचार का प्रमुख माध्यम होती है जिसके द्वारा हम अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करते हैं। जनपद में अधिकांश जनसंख्या हिंदी भाषी है शुद्ध हिंदी केवल नगरीय क्षेत्रों में बोली जाती है। संपूर्ण ग्रामीण जनसंख्या में हिंदी की प्रचलित बोलियां लोगों द्वारा बोली जाती हैं। जनपद में 97.45 प्रतिशत लोग हिंदी भाषा बोलने व समझते हैं तथा यहां पर 2.5% लोग उर्दू भाषी हैं। प्रवासी जनसंख्या में कुछ लोग पंजाबी एवं बंगाली भाषाओं का भी दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं। यहां पर मुख्य रूप से कन्नौजी एवं अवधी बोली का अधिकतम प्रचलन है। मुस्लिम क्षेत्रों में उर्दू भाषा का प्रचलन है तथा कुछ शिक्षित लोगों के द्वारा अंग्रेजी भाषा बोली जाती है।

धार्मिक समुदाय स्थिति:

धर्म जीवन जीने का आधार होता है। धर्म के द्वारा लोगों का रहन-सहन, वेशभूषा, खानपान, रीति-रिवाज, त्यौहार एवं सांस्कृतिक विशेषता का निर्धारण होता है। मानव विकास को काफी हद तक धार्मिक कारक भी प्रभावित करते हैं। विशेष धर्मों में विशेष प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं पाई जाती हैं। यहां पर हिंदू धर्म को मानने वाले लोगों की कुल जनसंख्या 85.71% है। सबसे बड़ा धार्मिक समूह हिंदू जनसंख्या का है। मुस्लिम जनसंख्या 13.59 प्रतिशत जनपद में निवास करती है तथा इसका संकेंद्रण कुछ विशेष क्षेत्र में है। अल्पसंख्यक धर्मों में यहां पर ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन तथा अन्य धर्म को मानने वाली कुछ जनसंख्या निवास करती है।

जनपद की धार्मिक स्थिति

क्र०सं०	प्रमुख धार्मिक समुदाय	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या प्रतिशत
01.	हिन्दू	3508131	85.71
02.	मुस्लिम	556219	13.59
03.	इसाई	5822	0.14

04.	सिख	5688	0.14
05.	बौद्ध	6671	0.16
06	जैन	446	0.01
07	अन्य	98	0.00
08.	धर्म नहीं बताया	9770	0.24

स्रोत जिला सांख्यिकी पत्रिका 2022

विभिन्न धर्म में खान-पान के लिए दिशा निर्देश होते हैं जिनका वह धार्मिक समूह अनुपालन करता है। हिंदू धर्मग्रंथों में शाकाहारी भोजन करने की सलाह दी गई है तथा गोमांस पूर्णतः वर्जित है। जो जनसंख्या मांसाहार भोजन ग्रहण करती है वह भी कुछ विशेष दिन एवं पवित्र त्योहारों पर मांसाहार का सेवन नहीं करती है। हिंदू लोग मंगलवार शनिवार को मांसाहार नहीं करते हैं। ठीक उसी प्रकार इस्लाम धर्म एवं यहूदी धर्म में सूअर का मांस सेवन करना वर्जित है। इन धार्मिक प्रतिबंधों के कारण यहां के लोगों को पर्याप्त मांस, जैविक प्रोटीन व विटामिन नहीं मिल पाता है तथा अत्यधिक उपवास व व्रत करने के कारण शरीर को पर्याप्त पोषण नहीं मिलता है जिससे वह विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं। शारीरिक एवं मानसिक अपंगता के कारण ग्रामीण विकास प्रभावित होता है।

हिंदू समाज में ग्रामीण क्षेत्रों में कई रूढ़िवादी प्रथाएं प्रचलित हैं जैसे कि औरतें सभी परिवारिक सदस्यों को भोजन कराने के उपरांत भोजन करती हैं अंत में भोजन कम पड़ जाने अथवा कम होने की स्थिति में दोबारा भोजन नहीं बनाती हैं एवं उसी से अपने आप को संतुष्ट कर लेती हैं जिसके कारण उन्हें पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं मिल पाता है तथा भोजन से मिलने वाले पोषक तत्व शरीर को नहीं मिल पाते हैं तथा वज्ञ विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझती रहती हैं अक्सर देखा गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में गर्भवती महिलाओं एवं किशोरियों में आयरन और कैल्शियम की कमी रहती है जिससे वह रक्ताल्पता, (एनीमिया) कमजोरी, तनाव आदि बीमारियों से ग्रस्त हो जाती हैं। जो इनके शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करती है। समस्त स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं ग्रामीण विकास को काफी हद तक प्रभावित करती हैं।

इस्लाम धर्म में महिलाओं पर बहुत अधिक धार्मिक प्रतिबंध लगे हुए हैं। संसार के प्रत्येक मुस्लिम देश में स्त्रियों की स्थिति बहुत ही दयनीय है इसका मुख्य कारण कठोर पितृसत्तात्मक व्यवहार का होना है। कई देशों में अभी तक मुस्लिम महिलाओं को समान अधिकार नहीं मिल पाए हैं तथा वह पुरुषों के बराबर विकास नहीं कर पाई हैं। इस धर्म में महिलाओं को नाम मात्र की स्वतंत्रता मिली हुई है तथा इन्हें संपत्ति समझा जाता है। यह बाहर पूरे शरीर को ढक कर ही निकलती हैं ज्यादातर इन्हें घर के अंदर ही रहना पड़ता है। मुस्लिम समाज में स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति बहुत ही गंभीर है तथा महिलाएं अशिक्षित होने के कारण विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं है अथवा धार्मिक कट्टरता के कारण वह चाह कर भी कोई भी मन मुताबिक कार्य नहीं कर पाती हैं। एक ही परिवार में आपस में शादी आदि करने के कारण इस धार्मिक समूह में अधिक अनुवांशिक समस्याएं पाई जाती हैं। परिवार नियोजन को इस धर्म में बहुत ही बुरा माना जाता है तथा बच्चों को अल्लाह की देन कहते हैं इसलिए इस धार्मिक समूह में जनसंख्या वृद्धि सबसे अधिक पाई जाती है। सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं में इस समाज की विशेष रुचि न होने के कारण यह समाज विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझता है जिससे इसकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है तथा मानव विकास अत्यधिक प्रभावित होता है।

आवासीय दशाएं:

जनपद हरदोई एक अति पिछड़ा जिला होने के कारण यहां पर ग्रामीण जनसंख्या अधिकतम मिलती है अत्यधिक सघन बसे हुए गांव में आधारभूत संरचनाओं की अत्यधिक न्यूनता है। अधिकतर गांव में घनत्व अधिकतम मिलता है तथा ग्रामीण अधिवासों का निर्माण अनियोजित है। बड़े गांव ग्राम सभा एवं छोटे गांव जो ज्यादातर एकल जाति अथवा धर्मिक समुदाय में बटा है। जनपद में स्थित समस्त गांव में आधारभूत संरचनाओं की कमी है लेकिन सरकार की कई योजनाओं के द्वारा धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत संरचनाओं का विकास हो रहा है जिससे मानव के विकास का उन्नत मार्ग प्रशस्त होगा। ग्रामीण लोगों के घरों से निकलने वाला कूड़ा कचरा एवं अपशिष्ट पदार्थ गांव के किनारे घोड़ा के रूप में लगाते हैं जिससे बीमारी एवं प्रदूषण फैलने का हमेशा खतरा बना रहता है वर्षा के समय यहां की गलियां अत्यधिक कीचड़ युक्त हो जाती हैं क्योंकि कई गांव ऐसे हैं जहां पर जल भराव की प्रमुख समस्या है यह जल भराव वाले ग्रामीण क्षेत्र विभिन्न रोगों को फैलाने वाले मच्छरों के लिए अनुकूल दशाएं प्रदान करते हैं जिससे इन क्षेत्रों में मलेरिया डेंगू चिकनगुनिया आदि गंभीर रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। साफ सफाई अधिक न होने के कारण यहां पर लोगों में संक्रामक बीमारियां अत्यधिक तेजी से फैलते हैं जिसका मुख्य कारण सामाजिक सहभागिता है। विभिन्न प्रकार के असामाजिक तत्व ग्रामीण जीवन को प्रभावित

करते हैं जिससे ग्रामीण जनों को जनधन की हानि होती है तथा जनपद के ग्रामीण विकास की गति अवरुद्ध होती है।

जनपद में आवास की स्थिति

क्र०सं०	आवास स्थिति	आवासों की संख्या (%)
01.	कच्चे मकान	28
02.	पक्के मकान	66
03.	अन्य	06

स्रोत जिला सांख्यिकी पत्रिका 2022

बाह्य आडंबर, रूढ़िवादी विचारधाराएं एवं अंधविश्वास:

ग्रामीण जनजीवन अधिक शिक्षित न होने के कारण लोगों में होने वाली स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से परिचित नहीं होता है एवं स्वास्थ्य जागरूकता की अत्यंत कमी पाई जाती है। अत्यधिक शिक्षा की कमी ग्रामीण क्षेत्र में रूढ़िवादिता, बाह्य-आडंबर, छुआछूत, अंधविश्वास आदि को अधिक मानता है। जिसके कारण किसी भी शारीरिक अथवा मानसिक समस्या के लिए वह क्षेत्र के ही बाबा, तांत्रिक, ओझा, नीम-हकीम, घरेलू वैद्य, पुजारी एवं झोलाछाप डॉक्टर से परामर्श लेते हैं। जिसके कारण कभी कभार प्राणों से भी हाथ धोना पड़ता है एवं आर्थिक शोषण भी अधिक होता है। अशिक्षा ही रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास को जन्म देती है जिसके कारण लोगों में भूत प्रेत, जादू टोना, टोटका आदि के प्रति अंधश्रद्धा होती है। उपरोक्त समस्याएं अधिकतर गरीब वर्ग एवं अनुसूचित जातियों में ज्यादा होती हैं अधिक पैसा ना होने के कारण यह लोग किसी भी बीमारी के लिए देसी डॉक्टरों, झोलाछाप डॉक्टरों, अथवा तांत्रिकों के पास इसलिए जाते हैं ताकि खर्चा कम आए। यदि समस्या का समाधान हो जाता है तो इन देसी डॉक्टरों एवं बाबाओं के प्रति और अधिक अटूट श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है अन्यथा यह बार-बार इन्हीं से जड़ी बूटियां एवं दवाइयां लेते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में फैली अशिक्षा, गरीबी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, सरकारी हॉस्पिटलों की ग्रामीण क्षेत्र से दूरी तथा निजी हॉस्पिटलों में महंगी चिकित्सा आदि से यह जनसंख्या अपनी स्वास्थ्य जांच कराने में एवं स्वास्थ्य संबंधी लाभ लेने में असमर्थ होती है।

साक्षरता की स्थिति

क्र०सं०	साक्षर जनसंख्या	साक्षरता प्रतिशत
01.	स्त्री	53.19
02.	पुरुष	74.39
03.	कुल	64.57

स्रोत जिला सांख्यिकी पत्रिका 2022

उपरोक्त तालिका के अनुसार जनपद हरदोई में साक्षरता का प्रतिशत अति निम्न है यहां की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण होने के कारण पढ़ी-लिखी नहीं है। क्योंकि क्षेत्र में शैक्षिक संस्थानों की स्थिति का बुरा हाल है। फिलहाल 2001 से 2011 के बीच में साक्षरता का प्रतिशत काफी बढ़ा है लेकिन फिर भी अधिकतर यहां की जनसंख्या अभी भी कक्षा 8 पास से ऊपर की कक्षाओं में नहीं गई है। इसलिए जनपद में अंधविश्वास ज्यादा है लोग झाड़ने फूकने व टोने टोटके में विश्वास करते हैं जो स्वास्थ्य जोखिमों से जूझने की और इंगित करता है। जनपद में महिलाओं की साक्षरता में काफी कमी पाई गई। अभी भी आधी महिलाएं यहां पर अशिक्षित हैं जिसके कारण वह अपने शिशुओं में होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों से वाकिफ नहीं हो पाती हैं जो एक बड़ी समस्या का रूप ले लेता है।

जन्म के समय शिशुओं में विभिन्न प्रकार की बीमारियां होती हैं जिनके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में झार फूंक एवं टोना टोटका किया जाता है जो जच्चा एवं बच्चा दोनों के लिए खतरनाक होता है। बच्चों में रिकेट्स रोग, महिलाओं में गर्भपात, बंध्यापन, चर्म रोग, कैन्सर, मानसिक बीमारी, सरदर्द, कैंसर, गुर्दे की पथरी, गठिया रोग, मधुमेह आदि समस्त रोगों के लिए ग्रामीण जनसंख्या टोना टोटका एवं भूत बाधा में विश्वास करती है। जिसके कारण यह लोग ओझा एवं पुजारियों के चक्कर में समय और पैसा तथा सेहत तीनों को बर्बाद करते हैं। यह लोग स्वास्थ्य केदो पर तब जाते हैं जब समस्या अति गंभीर हो जाती है अथवा झड़ने फूकने से जब समस्या का निदान नहीं हो पता है। रोगी की स्थिति उस समय ऐसी होती है की स्वास्थ्य को सही करना डॉक्टर के लिए संभव हो जाता है। इन विभिन्न प्रकार के ग्रामीण अंधविश्वासों के कारण लोगों को अपने प्रिय जनों को खोना पड़ता है।

क्षेत्र में चारागाहों की अत्यंत कमी के कारण पशुओं में भी विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य संबंधीसमस्याएं पाई जाती हैं जैसे गर्भधारण ना करना सही दूध ना देना कमजोर हो जाना मर्कट हो जाना आदि इन समस्याओं के लिए

भी लोग बाबाओं एवं ओझा तांत्रिकों से झाड़-फूंक करवाते हैं जिसके कारण जानवर और अधिक बीमार हो जाता है तथा उसकी कार्यक्षमता एवं उपादेयता अत्यधिक निम्न हो जाती है। जादू टोना भूत प्रेत बाधाएं न केवल मानवों एवं पशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है अपितु यह लोगों के आपसी संबंधों पर विपरीत प्रभाव डालता है जिसका मुख्य परिणाम दुश्मनी के रूप में उजागर होता है जिससे आपसी संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा आपसी फुट के कारण अत्यधिक आर्थिक हानि होती है।

जनपद हरदोई में अत्यधिक अशिक्षित जनसंख्या होने के कारण भूत प्रेत टोना टोटका बाधाओं आदमी अटूट श्रद्धा रखती है जिसके कारण लोगों के रिश्तो में कड़वाहट आती है तथा सामाजिक संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ता है समस्त प्रकार के प्रभाव ग्रामीण विकास को अत्यधिक मात्रा में प्रभावित करते हैं।

<u>References</u>:

Singh, R.L. et al. (1978) Approaches towards geography of health, Banaras Hindu University, Journal Vol. 23

Singh, Savindra (2004) Physical Geography. Vasundhara Publication. Daudpur – Gorakhpur.

Singh, Shaliw (1995) Thesis, U671(J) 25213-Transformation of Agriculture in Aurain Block a Gegraphical Analaysis – B.H.U.

Singhai, G.C. (1999) Medical Geography Vasundhara Pub.

Achar, S.T. (1997) Tropical Diseases p. 98 Pub. –Abdulla Orient Longman Ltd. 36 Annasalai mound Road. Madras.

Adam, R.M. (1962) Agriculture and Urban Life in early SW Iran, Science, 136.

Agnihtori, R.C. (1980) Geomedical environmental and Health care. A Study of Bundelkhand Region. Rawat publication New Delhi.

Agrawal, R.S. (1965) Soil fortility in India – Asia Pub. House P. 1

Akhtar, R. and Learmonth A.T.A. (1985) Geographical Aspects of Heath and Disease in India concept publishing co, New Delhi pp 12,17.

जिला सांख्यिकी पत्रिका हरदोई 2021

मातृ शिशु कल्याण केंद्र रिपोर्ट 2020

जिला स्वास्थ्य अधिकारी रिपोर्ट 2020